IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)
An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

गिरीश पंकज के कथा साहित्य में धार्मिक व्यंग्य

डॉ. बी. संतोषी कुमारी
असिस्टन्ट प्रोफेसर, पीजी विभाग,
दक्षिण भारत हिन्दी प्रचार सभा, मद्रास
टी. नगर, चेन्नै – 600017

वर्तमान समय में लोग धर्म के प्रति अधिक सतर्क प्रतीत हो रहे हैं। किंतु धर्म वर्तमान मात्र का ही विषय नहीं है बल्कि यह सदियों से चला आ रहा है। हमारे पूर्वजों के समय से ही धर्म का बोल-बाला ऐसा ही रहा होगा जैसा कि आधुनिक समय में है। किंतु समाज को इस बात का भी विचार करना अत्यंत आवश्यक है कि अब के धर्म और तब के धर्म का जो तात्पर्य है वह अब बदल चुका है। पहले धर्म का मतलब होता था लोगों को सन्मार्ग का दर्शन करना, भूले को सही राह दिखाना, भ्रष्ट व्यक्ति को सही मार्ग पर लाना जिससे उसके मन को शांति मिले। किंतु वर्तमान समय में धर्म का अर्थ पूर्णतः इसके विपरीत हो चुका है। अब धर्म के नाम पर लोगों को गुमराह किया जा रहा है। अपने धर्म की रक्षा करने के नाम पर दूसरों के धर्म को बदनाम करने तथा उन्हें अपमानित करने जैसे कुरीतियों का चलन अधिक बढ़ गया है। अब धर्म के नाम पर अच्छे काम कम और बुरे काम अधिक किए जा रहे है। आधुनिक समय का यही सत्य है कि लोगों को उनके धर्म और भगवान की दुहाई देकर उनको ठगा जा रहा है। वर्तमान समय में ढोंग का प्रचलन अधिक बढ़ गया है। जिसके माध्यम से जनता को पहले आकर्षित कर लिया जा रहा है और उसके बाद उसके इच्छा अनुसार ठगने के कार्य को बड़े ही आसानी से अंजाम दिया जा रहा है। बाहरी दिखावा और अंधविश्वास ही वर्तमान में धर्म का प्रमुख अंग बन गया है। जनता की समस्याओं को नष्ट करने तथा उनका सफल भविष्य बनाने का झांसा देकर कितने ढोंगी बाबा अपने स्वार्थ की पूर्ति कर रहे हैं। इस तरह के साधुओं का उद्देश्य लोगों की समस्याओं का निराकरण करना नहीं परंतु इस प्रवृत्ति के साधु लोगों की परेशानियों को और बढ़ा देते हैं। विगत वर्षों में हमें ऐसे कई जीता जागता उदाहरण देखने को मिले हैं जिसमें बाबाओं ने अपने कुछ चुनिंदा शिष्यों की मदद से समाज में यह भ्रांति फैला दिया कि उनके शरण में जाते ही सभी समस्याओं का अंत हो जाता है। जिसे सुनकर हजारों की संख्या में उनके अनुयाई बन गए थे लेकिन ये बाबा लोगों की समस्याओं को दूर नहीं किया किंतु उन्हें बुरी तरह से अपने माया जाल में फंसा कर उनका शोषण और अपने स्वार्थ की पूर्ति कर रहे थे। इसका यह मतलब कतई नहीं है कि सभी संत महात्माओं का ध्येय जनता का शोषण करना ही है किंतु व्यक्ति को चाहिए कि किसी का भी अनुसरण करने से पहले उसके विषय में अच्छी तरह से जान परख ले कि जो भी चीज उसे सुनाई या दिखाई दे रही है, वास्तव में वह उसे दिखाई दे रहा है या उसे वही चीज दिखाया जा रहा है। क्योंकि दिखाने वाला व्यक्ति उस बाबा का प्रचारक भी हो सकता है। पुराने समय से ही महात्मा या संत पुरुषों का यही काम है कि वे समाज को अंधकार से प्रकाश की ओर ले जाते हैं किंतु जनता को भी अपने प्रति इस बात के लिए सजग रहना चाहिए कि वास्तव में वह प्रकाश की तरफ जा रहा है या प्रकाश के नाम पर उसे अंधकार में धकेला जा रहा है। वास्तव में धर्म लोगों को सही मार्ग दिखलाता है गलत कार्यों को करने से रोकता है किंतु दुर्भाग्य की बात यह है कि आधुनिक समय में जो लोग धर्म के कार्यों का संचालन कर रहे हैं लोगों को नैतिक कार्यों को सीखने का उपदेश दे रहे हैं वे स्वयं ही अनैतिक कार्य करते हुए पकड़े जा रहे हैं। जो संत सभी को एक ही भगवान की संतान बताते हैं, सभी को आपस में संबंधी होने की बात बताते हैं वे ही समाज में भेदभाव के जन्मदाता भी हैं। समाज में अनैतिकता को बढ़ाने की जड़ भी है।

जनता को इस बात को समझने की आवश्यकता है कि वास्तव में धर्म तोड़ने नहीं बल्कि जोड़ने का सूत्र है। धर्म अच्छाई को बढ़ावा देने का एक ऐसा साधन है जिससे सभी के हृदय में प्रेम और भाईचारे की भावनाओं का विकास होता है। आत्मा का परमात्मा से साक्षात्कार होता है।

धार्मिक व्यंग्य : गिरीश पंकज जी आधुनिक समय के एक ऐसे व्यंग्यकार है जिन्होंने समाज में प्रचलित हर क्षेत्र की विसंगतियों पर व्यंग्य किया है। उन्होंने अपने व्यंग्य के माध्यम से समाज की सभी विसंगतियों को खत्म करने का प्रयास किया है फिर वह चाहे राजनीतिक हो सामाजिक हो सांस्कृतिक हो या धार्मिक विसंगति हो। मानव समाज के इतना शिक्षित होने और जागरूक होने के बाद भी आज भी समाज में अनेक धार्मिक और सांस्कृतिक विसंगतियां फैली हुई है। जिसको गिरीश पंकज जी ने अपने व्यंग्य के माध्यम से खंडन करने का सफल प्रयास किया है। धर्म मानव को सच्चाई का मार्ग दिखाने का काम करता है। मनुष्य को धर्म ही मानवता के गुण सीखना है या सीधे शब्दों में कहा जाए तो धर्म एक ऐसा साधन है जो मनुष्य को जीवन जीना सिखाता है जो मनुष्य को मोक्ष तक ले जाने का काम करता है और मनुष्य को भगवान प्राप्ति के मार्ग को दिखलाता है। किंतु वर्तमान समय में धर्म के नाम पर लोगों को गुमराह किया जा रहा है धर्म के नाम पर लोगों को ठगने का काम किया जा है रहा है। धर्म के नाम पर मनुष्य आपस में लड़ रहा है। धर्म के नाम पर मानव समाज में ऐसी अनेक विसंगतियाँ फैली हुई है। इन्हीं विसंगतियों को गिरीश पंकज ने व्यंग्य के माध्यम से उजागर करने का प्रयास किया है।

मानव जब से सभ्य और शिक्षित हुआ है तभी से वह अच्छे कर्म अर्थात धर्म की तरफ अग्रसर हुआ है। धन के माध्यम से ही मानव ने अच्छे कर्म करना सीखा है धर्म का अर्थ भी तो शुद्ध आचरण और अच्छा कर्म करना होता है ऐसा कर्म जो की सभी को धारा करने लायक हो धर्म एक ऐसी परंपरा है जिसमें हर तरह की अच्छाई अच्छे कर्म सद्भावना सात्विक विचार दूसरों के प्रति आदर समस्त जीवों के कल्याण की भावना इत्यादि बातों का अनुसरण करने वाला वर्ग समूह होता है। धर्म हमें अच्छा कर्म करना सीखता है। हमें अच्छाई की ओर ले जाता है। धर्म में किसी भी तरह की बुराई या बुरे कर्म का स्थान नहीं रहता है। किंतु वर्तमान में लोग धर्म के नाम पर बुरे कर्म कर रहे हैं। आए दिन धर्म के नाम पर लोगों को ठगने की घटनाएँ मिलती रहती है। वर्तमान समय में धर्म के नाम पर धोखाधड़ी हो रही है। वर्तमान समय में तो राजनीति भी धर्म के नाम पर ही हो रही है। इस समय धर्म एक ऐसा मुद्दा बन गया है जिसके नाम पर कुछ भी किया जा सकता है। जबकि धर्म हमें आपस में भेदभाव करना नहीं सिखाता है। किंतु आधुनिक समय में धर्म का नाम लेकर किसी को भी लड़ाया जा सकता है। आज धर्म के नाम पर लोगों को इतना गुमराह कर दिया गया है कि भले ही उन्हें धर्म का अर्थ पता ना हो किंतु लोग धर्म के नाम पर एक दूसरे की जान ले भी सकते हैं और अपनी जान दे भी सकते हैं। वर्तमान में कुछ लोग खुद को धर्म का रक्षक समझते हैं। दुःख की बात यह है कि धर्म की रक्षा करने के लिए दूसरों की सुरक्षा को भंग करते हैं। धर्म के ऐसे ठेकेदारों की वजह से ही धर्म के नाम पर अधर्म हो रहा है। किंतु किंतु आजकल धर्म के नाम पर ढ़ोंग इतना बढ़ गया है कि लोगों का धर्म से विश्वास ही धीरे-धीरे उठता चला जा रहा है। धर्म के नाम पर अलग-अलग धर्मगुरु अलग-अलग बातें बताते हैं जिसकी वजह से लोग असमंजस में पड़ जाते हैं। वे यह निश्चित ही नहीं कर पाते हैं कि कौन सही है और कौन गलत है। उन्हें किसकी बात माननी चाहिए और किसकी बात नहीं माननी चाहिए। आज धर्म एक ऐसा जरिया बन गया है जिसके नाम पर हर कोई अपना स्वार्थ साधने में लगा है।इस समय धर्म के नाम पर इतना पाखंड और आडंबर बढ़ गया है कि और धर्म से लोगों की आस्था ही उठने लगी है। इसकी वजह यह है कि और धर्म से लोगों की आस्था ही उठने लगी है। इसकी वजह यह है कि जितने भी बड़े धार्मिक संस्थान है जहाँ पर लोग धर्म के नाम पर जुड़े हैं। धार्मिक कार्य करने के लिए जुड़े उन संस्थाओं में से कई संस्थाएँ ऐसी है जिसकी वास्तविकता सुनकर लोगों की रूह काँप जाती है। उन संस्थाओं के महंत संस्था में धर्म के आड़ में अनैतिक कार्यों को अंजाम देते हुए पकड़े जा रहे हैं। एक दो नहीं बल्कि ऐसी अनेक घटनाएं लगातार घट रही है जो कि मीडिया के द्वारा हमारे सामने आ रही है। जिसकी वजह से साधु महात्माओं से भी लोगों का विश्वास उठता चला जा रहा है। यह गंभीर चिंता का विषय है। ऐसे लोग जो धार्मिक प्रवृत्ति के हैं, जिनका कम लोगों को धर्म का मार्ग दिखाना है। उनमें ही दुराचार की भावना बढ़ती जा रही है। किंतु महात्माओं के प्रति ऐसी सोच रखना गलत है ।वह भी एक दो बुरे लोगों की वजह से सभी पर ऐसा आरोप नहीं लगाया जा सकता है क्योंकि जिनका काम ही धर्म करना है और धर्म को बढ़ावा देना है, वे अपने मूल्यों से नहीं हिल सकते हैं। किंतु यह सत्य है कि कुछ लोग धर्म के नाम पर झूठा पाखंड करते हैं और लोगों को ठगने का काम करते हैं। इन पाखंडी लोगों की वजह से ही सही लोग भी शक के घेरे में आ रहे हैं जबकि ये पाखंडी लोग ही धर्म के नाम पर पाखंड करके अपने ही लोगों द्वारा अपने तेज या गुण का झूठा प्रचार करके अपना कारोबार अर्थात धंधा चल रहे हैं। इन्हीं धर्म के नाम पर किए जा रहे झूठ पाखंड पर भी व्यंग्यकारों ने व्यंग्य किया है और व्यंग्य के माध्यम से समस्त समाज को जागरूक करने का प्रयास किया है। अक्सर बुरे लोग को अपनी बुराइयों को छुपाने के लिए थोड़े अच्छे कर्म करते देखना को मिल जाता

है। वास्तव में वह अपनी बुरे कार्यों को छुपाने के लिए अच्छे कर्म करने का दिखावा करते हैं। इसी सामाजिक व्यवहार को उजागर करते हुए गिरीश पंकज जी ने लिखा है "पि अभी साफ हटते नहीं पीछे भी कभी हम लिए के काम अच्छेछले दिनों मंदिर में उत्सव था सबसे ज्यादा चंदा तो हम ही ने दिया था पिछले दिनों संत जी पधारे थे ना उनकी सारी व्यवस्था भी हमीं ने की।"[1]

उपर्युक्त कथन सज्जन नामक पत्र द्वारा कहा गया है जब बूचड़ सेठ ने उत्सर्जन व्यक्ति की बूचड़खाने का पार्टनर बनने को कहा तब बूचड़ सेठ के प्रस्ताव को सज्जन व्यक्ति ने स्वीकार कर लिया और अपने अनुपयोगी पशुओं को बूचड़ सेठ के हवाले करने के लिए हाँ कह दिया समाज में सज्जन व्यक्ति जैसे अनेक लोग पड़े हैं जो कि खुद को धार्मिक होने का दिखावा करते हैं सबसे अच्छा व्यवहार भी करते हैं और कभी-कभी सामाजिक कार्य भी कर लेते हैं। किंतु जैसे ही उनके मन मुताबिक और उनके फायदे का कोई प्रस्ताव रखता है तो यह उसे समय अपने धर्म को भूलकर सिर्फ अपने फायदे के लिए और धार्मिक कार्य भी करने के लिए तैयार हो जाते हैं। वर्तमान समय में मानव समाज ऐसे पाखंडियों से भरा पड़ा है। कहीं पर ऐसी प्रवृत्ति वाले लोग मिल जाएंगे जो कि बुरे कारोबार करते हैं। बुरे लोगों से जुड़े हैं किंतु इसी तरह के लोग सफेद या धार्मिक किस्म की दिखने वाली पोशाक भी पहनते हैं। दिखाने के लिए कभीहैं देते कर भी दक्षिणा दान कभी-। में क्षेत्र अपने भी जापू बड़ी करवा देते हैं ताकि उनका वास्तविक रूप बाहर ना आ पाए यही वर्तमान समाज का सच है वर्तमान में कोई भी श्रद्धा भक्ति से ना तो पूजा पाठ कर रहा है ना ही कोई सामाजिक कार्य ही वह हृदय से कर रहा है बल्कि इस समय लोग अपनी बुराई को छुपाने के लिए अच्छे कर्म कर रहे हैं ठीक उसी तरह जिस तरह से बड़े लोग सामाजिक कार्यों के लिए इसलिए खर्च नहीं करते हैं कि उनका अंतर हृदय चाहता है बल्कि वह बाहरी खर्च सिर्फ इसलिए करते हैं कि उन्हें सरकार को कर ना देना पड़े और समाज में उनकी अच्छी छवि बनी रहे कथन द्वारा यह बताने का प्रयास किया है कि यह एक ऐसा समय चल रहा है जिसमें लोग धर्म को छुपाने के लिए धर्म कर रहे हैं अपनी गलतियों को छुपाने के लिए थोड़े अच्छे काम कर रहे हैं। इस समाज में फल फूल वही रहा है जो कि बुरे कर्मों से जुड़ा है वह अपने बुरे कारोबार की सफलता के लिए भगवान से मन्नत भी मांगते हैं इस बात को व्यंग्यकार गिरीश पंकज जी ने प्रकट करते हुए इस तरह से लिखा है "-प्रभु मेरा बूचड़ खाना सफल कर दे। तुझे मैं रोज दूध चढ़ाऊँगा[2]"

उपर्युक्त कथन बूचड़ सेठ ने भगवान से मन्नत मांगते हुए कहा है। जब बूचड़ सेठ अपना बूचड़खाना खोलने जा रहा था तब कुछ लोगों ने उसका विरोध किया। किंतु उसे विरोध से कोई फर्क नहीं पड़ने वाला था। क्योंकि बूचड़ सेठ को यह बात बहुत अच्छी तरह से पता थी कि इस समाज में हर चीज बिकने के लिए तैयार बैठी हुआ है। अगर इंसान के पास पैसा है तो इस तरह के छोटे-मोटे विरोध से उसका कुछ भी बुरा नहीं होगा। बूचड़ सेठ की यह सोच गलत नहीं है क्योंकि वर्तमान समाज की यही सच्चाई है कि समाज में पूरा तंत्र बिकने के लिए तैयार है। जिसके पास पैसा है, वह उन पैसों के बल पर किसी भी तरह का बड़ा से बड़ा कार्य कर सकता है और उसके कार्य में किसी भी तरह की रुकावट या बाधा उत्पन्न नहीं होगी क्योंकि सच्चाई यही है कि सामाजिक बुराइयों को रोकने के लिए जो सुरक्षा व्यवस्था बनाई गई है और जिन पर इसकी जिम्मेदारी दी गई है, वही लोग बुरे कार्य करवाने में गुर्जर सिंह जैसे लोगों की मदद करते हैं। ऐसा नहीं है कि यह सुरक्षा व्यवस्था एकदम किसी चीज को रोक ही नहीं पाती है। रोकने का काम भी होता है। बुरे काम तो बुरे हमारे समाज में अच्छे काम भी रोक दिये जाते हैं। अगर करने वाले के पास पैसा और पहुँचना हो तब। बाकी पहुँच वाले तो बूचड़ सेठ की तरह इसी समाज में अनेक बुरे काम आज भी कर रहे हैं, फिर चाहे वह शराब बेचने का काम हो, तस्करी करने का काम हो, चोरी करने का काम हो या फिर जिस्मफरोसी करने का काम हो। ये सभी कार्य समाज में बड़े ही अच्छी तरह से चल रहे हैं। इनके चलने के पीछे का रहस्य एक ही है। इन कार्यों को करवाने वाले मालिक सुरक्षा के ठेकेदारों को हफ्ता या महीना बड़े ही इमानदारी से भिजवा देते हैं। जिसकी वजह से इनका कोई भी असामाजिक कार्य सुचारू रूप से चलता रहता है। हमारे समाज की यही विडंबना है कि अच्छे कार्यों को करने के लिए कई नियमों का पालन करना पड़ता है और कई जगह से उस कार्य को करने की अनुमति लेनी पड़ती है। अनुमति लेने की प्रक्रिया बहुत जटिल होती है।

रूढ़िवादिता : रूढ़िवादिता एक ऐसी विचारधारा है जो पुरानी मान्यताओं में विश्वास करती है और सदा उसी का अनुकरण करती है। यह एक ऐसी सामाजिक मान्यता है जो चिरकाल से चली आ रही परंपराओं के प्रति सम्मान को बढ़ावा देती है। यह विचारधारा नए परिवर्तन को नहीं अपनाती है बल्कि पुराने और आजमाए हुए विचारों को ही कायम रखने का समर्थन करती है। मानव समाज में ऐसी अनेक परंपराएँ है, जिनका अनुसरण हम पीढ़ी दर पीढ़ी करते चले आ रहे हैं। मानव समाज में ऐसी अनेक परंपराएँ बनाई गई है। इन परंपराओं को बनाने का उद्देश्य अवश्य ही मानव समाज का कल्याण और उसका विकास करना ही रहा होगा। किंतु हमारे समाज में ऐसी अनेक परंपराएँ हैं जो मानव समाज के लिए अहितकर है फिर भी उनका

अनुसरण किया जा रहा है। हो सकता है जब इन परंपराओं को नया-नया बनाया गया होगा तब उस समय के समाज के लिए ये जरूर ही हितकर रही होगी। किंतु अब समय और समाज काफी बदल चुका है, जिसकी वजह से इन परंपराओं का अनुसरण करने से मानव समाज का हित न होकर नाश हो रहा है। अतः हमें भी समय के अनुसार इस तरह की परंपराओं में परिवर्तन कर देना चाहिए या उनका अनुसरण करना छोड़ देना चाहिए जो की मानव समाज के लिए हितकर नहीं है। किंतु दुख की बात यह है कि आज भी शिक्षा के इतना विकास होने के बावजूद भी लोग उन परंपराओं का अनुसरण करते चले आ रहे हैं। इसी बात से चिंतित होकर व्यंग्यकारों ने वर्तमान समाज को जागरुक करने के लिए व्यंग्य किया है। शुरूआत से ही मानव समाज में लिंग भेद की समस्या चली आ रही है।

अब समय आ गया है इससे ऊपर ऊठने की। अपने सकीर्ण विचारधारा से बाहर निकलने की।शारीरिक अपंगता या इक्षित लिंग पाना किसी के वश में नहीं है। यह तो भगवान की लीला है। वे जिसे चाहे पुरुष का शरीर प्रदान करें या जिसे चाहे स्त्री का । हमारे समाज में शुरू से ट्रांसजेंडर को बराबर का दर्जा नहीं मिला है। यह जानते हुए भी उन्हें समाज में कभी बराबर का दर्जा मिला ही नहीं। आज भी उन्हें हेय दृष्टि से देखा जाता है। समाज तो समाज है। ट्रांसजेंडर को उनके परिवार के लोगों से भी सम्मान नहीं मिलता है। जैसे ही किसी माता-पिता को इस बात का पता चलता है कि उसका संतान ट्रांसजेंडर है, वैसे ही उसे अपने घर से निकाल देते हैं। समाज की इसी खोखली विचारधारा को गिरीश पंकज जी ने उजागर करते हुए एक पिता द्वारा इस तरह से प्रकट करवाया है।" बेटा अब तुम इस घर को छोड़कर अपनी दुनिया में चले जाओ जीने के लिए तुम्हें कोई तकलीफ नहीं होगी। यहाँ रहोगे तो हम किसी को मुँह नहीं दिखा सकेंगे।"[3]

उपर्युक्त कथन चीकू के पिता द्वारा कहा गया है। आज समाज में जहाँ लिंग के नाम पर किसी भी तरह के भेदभाव नहीं होने की बात चल रही है ट्रांसजेंडर को उनके अपने ही घर से बेदखल कर दिया जाता है और उन्हें ट्रांसजेंडर के समाज में रहने के लिए मजबूर किया जाता है। जिससे कि वे अपनी जीविका चलाने के लिए नाचने गाने और माँगने के लिए मजबूर हो जाते हैं। दुख की बात तो यह है कि ऐसा करने के लिए उन्हें उनके परिवार द्वारा ही मजबूर किया जाता है। ट्रांसजेंडर संतान को घर से बेदखल करने की परंपरा हमारे समाज में पूरी तरह से जड़ जमायी हुई हैं। इसके विरुद्ध समाज को जागरूक होने की आवश्यकता है। किसी की भी संतान को उसके ट्रांसजेंडर होने पर घर से निकाल देने की इस परंपरा को खत्म कर देना चाहिए। आज के समाज में यह सत्यापित हो चुका है कि संतान स्त्री हो पुरुष हो या ट्रांसजेंडर हो वह भी अपने परिवार का नाम रोशन कर सकता है। समाज के लिए गर्व का कारण बन सकता है। वह भी सफलता की उन सभी ऊँचाइयों को प्राप्त कर सकता है जिसे आमतौर पर स्त्री या पुरूष प्राप्त करते हैं। लिंग के आधार पर उन्हें तुच्छ या छोटा समझने वाले समाज को यह समझना चाहिए कि खोट लिंग में नहीं है बल्कि समाज की सोच में है जो कि लिंग के आधार पर भेदभाव करते हैं और ट्रांसजेंडर को तुच्छ दृष्टि से देखते हैं। बुराई ट्रांसजेंडर में नहीं है बल्कि बुराई इस समाज की सोंच में है। समाज से ट्रांसजेंडर को अलग करने की जरूरत नहीं है। बल्कि जरूरत है लोगों की सोच में बदलाव लाने की। अपने संकीर्ण विचारों को खुला बनाने की। लिंग भेद जैसी विचारधारा की वजह से समाज में आज चीकू जैसे अनेक लड़कों को अपने घर परिवार और समाज से बेदखल कर दिया जाता है। लिंग के नाम पर हो रहे इस अत्याचार को रोकने की सख्त जरूरत है क्योंकि इससे बेदखल होने वाले लड़कों की जिंदगी बर्बाद हो जाती है। चीकू ने तो अपनी प्रतिभा के बल पर ट्रांसजेंडर समाज में रहते हुए भी कलेक्टर का पद हासिल कर लिया। किंतु उसके जितनी प्रतिभा हर बच्चे में नहीं हो सकती है जो कि संघर्ष करते हुए और परेशानियों से लड़ते हुए अपने सपनों को प्राप्त कर सके। कुछ ऐसे भी लोग रहते हैं जिन्हें मानसिक रूप से सहारे और प्रोत्साहन की जरूरत पड़ती है। जो कि उसे सबसे ज्यादा उनके परिवार से मिलता है। अगर उन्हें सबसे लिंग के आधार पर इस तरह से समाज से और अपने घर से अलग कर दिया गया तो इस तरह के बच्चे अपने जीवन में बहुत पीछे रह जाएंगे और दूसरे ट्रांसजेंडरों की तरह वे भी नाचने गाने और माँग कर जीवन बिताने के लिए मजबूर हो जाएँगे।

समाज से इस तरह की परंपरा को खत्म करने की आवश्यकता है जो कि वर्तमान समय में रूढ़ि का रूप धारण कर चुकी है। सामाजिक बुराइयों को खत्म करने के लिए लोग हर वर्ष त्यौहार मनाते हैं। इस दौरान वे बुराइयों को नष्ट करने के लिए कभी दीपक जलाते हैं तो कभी रावण का पुतला। किंतु कभी भी वे अपने अंदर की बुराइयों को पहचानने की कोशिश नहीं करते हैं। इसी बात से अवगत कराने के लिए गिरीश पंकज जी ने रावण के माध्यम से इस तरह से प्रकट करवाते हुए लिखा है "-भाई मेरे तुमने मेरे पुतले को जलाया है। मैं तो तुम्हारे सामने खड़ा हुआ हूँ और यह आज की बात थोड़ी ना है हर साल का ही यही लफड़ा है। तुम लोग मेरा पुतला जलाकर लौटते हो गाना बजाना करते हो और मैं जस का तस रहता हूँ[4]

उपर्युक्त कथन रावण द्वारा कहा गया है। विजयदशमी को जब व्यंग्यकार रावण को जलाकर वापस लौट रहे थे उसी समय एक भयानक और जोर की हँसी सुनकर व्यंग्यकार ने पलट कर देखा। वह देखकर आश्चर्य चकित रह गया क्योंकि

उसके सामने रावण खड़ा था। जो कि जोरहँ से जोर-स रहा था। जब व्यंग्यकार ने रावण से कहा कि हम तो अभी तुम्हें जलाकर आ रहे हैं। फिर तुम अभी जिंदा कैसे हो ? रावण व्यंग्यकार की बातें सुनकर हँस पड़ा और उसने कहा कि यह पहली बार थोड़ी ना है जब तुम लोगों ने मुझे जलाया है। यह तो हर साल का काम है। जब व्यंग्यकार ने रावण से कहा कि जलने के बाद तुम जिंदा कैसे रह सकते हो तब रावण ने व्यंग्यकार के प्रश्नों का जवाब देते हुए कहा कि तुम सब हर वर्ष मेरे पुतले को जलाते हो लेकिन अपने अंदर के रावण को नहीं जलाते हो। जब तक तुम लोग अपने अंदर के रावण को नहीं जलाओगे तब तक मैं जिंदा रहूँगा। रावण ने व्यंग्यकार की आँखें खोल दिया। उसने सच ही कहा लोग हर साल रावण के पुतले को ही तो जलाते हैं। अपने अंदर के रावण को तो वे देख भी नहीं पाते हैं।। जिस रावण को हम हर साल जला कर खत्म करना चाहते हैं वह कोई और नहीं बल्कि हमारे अंदर छुपी हुई बुराईयाँ ही तो हैं। अपने अंदर की बुराई को कोई पहचानना ही नही चाहता है और न ही उसे खत्म करने का प्रयास ही करता है। यही वजह है कि जो भी सामाजिक परेशानियाँ या बुराइयाँ है वह खत्म नहीं होती है। अतः लोगों को रावण का पुतला जलाने के बदले अपने अंदर की बुराइयों को खत्म करने का प्रयास करना चाहिए। जब ऐसा प्रत्येक व्यक्ति द्वारा किया जाएगा तभी हमारा समाज बुराई मुक्त हो पाएगा।

धार्मिक अंधविश्वास : धर्म अर्थात अच्छा को धारण करना। धर्म के बारे में कहा गया है कि यह एक अच्छा जीवन जीने की कला है।यो तो धर्म के संदर्भ में अनेक मान्यताएँ हैं किंतु दुसरों की भलाई से बढ़कर कोई धर्म नहीं होता है। आध्यात्मिक और जागृति धर्म का एक महत्वपूर्ण अंग इसके द्वारा जीवन प्रकृति आत्मा, परमात्मा और मन की गहराई को जानने का प्रयास किया जाता है।वर्तमान समय में धर्म के नाम पर अनेक धकोसले प्रचलित है। उन धकोसलों को बिना सोंचे समझे मानना अंधविश्वास है। अंधविश्वास एक ऐसा विश्वास जो कि तर्कहीन या अलौकिक है। इन धकोसलों की वजह से लोग गुमराह हो जाते हैं। इसकी वजह से कई बार लोग अपने भाग्य पर भी निर्भर हो जाते हैं। अंधविश्वास एक प्रकार का मानसिक रोग है। जिसकी वजह से लोग अपने मन में तर्कहीन चीजों पर विश्वास कर लेते हैं। अंधविश्वास प्राचीन काल से चला आ रहा है। अंधविश्वास के द्वारा लोग कुछ ऐसी बातों पर विश्वास करने लगते हैं जिसके पीछे कोई तर्क या सच्चाई नहीं रहती है। पहले लोग शिक्षा के अभाव में हर तरह की प्राकृतिक विपदाएँ या बीमारियों को भगवान का प्रकोप मान लिया करते थे। वर्तमान समय में भी इतना शिक्षा और ज्ञान बढ़ने के बावजूद भी लोगों का अंधविश्वास से भ्रम नहीं टूटा है। बल्कि जो शिक्षित लोग हैं वे ही अधिक अंधविश्वास की जाल में जड़े हुए हैं। कुछ लोग अपने पूर्वजों द्वारा चलाई गई परंपराओं को न तोड़ने की मानसिकता से अंधविश्वास के जाल में फंसे हुए हैं। ऐसे अनेक तथ्य है जिसकी वजह से समाज के अलग-अलग वर्ग के लोग ऐसे भिन्न-भिन्न कर्म की वजह से आज भी अंधविश्वास से उबर नहीं पा रहे हैं। जबकि अंधविश्वास के जाल में फंस कर हर रोज अलग-अलग लोग अलग-अलग जगह पर ठगे जा रहे हैं। और उनकी इस विश्वास का फायदा कुछ फर्जी साधु या बाबा उठा रहे हैं। वे लोगों को धर्म की दुहाई देकर उनके जीवन के सभी कष्ट दूर करने के नाम पर, उनकी सारी परेशानियों को खत्म करने के नाम पर अपने हाथ की सफाई द्वारा कुछ चमत्कार दिखा देते हैं और लोगों का विश्वास जीत कर उनसे मनमाना धन ले लेते हैं। इसी तरह के फर्जी और हाथ की सफाई करने वाले एक बाबा का पर्दाफाश करते हुए गिरीश पंकज जी ने इस तरह से प्रकट किया है- “बाबाजी आपकी कृपा से यह शीशी फोकट में मिल गई वैसे बाजार में यह कितने में मिल जाती है।”[5]

उपर्युक्त कथन व्यंग्यकार द्वारा कहा गया है। एक बार जब व्यंग्यकार को इस बात की खबर मिलेगी शहर में एक चमत्कारी बाबा आए हुए हैं और वह किसी अपने बड़े भक्त के पास ठिकाना जमाये हुए हैं। वे इतने चमत्कारी है कि अपना हाथ हवा में लहरा कर कभी भभूत कभी सेंट की शीशी कभी मिश्री तो कभी मिठाई जैसी अनेक चीज निकाल कर अपने भक्तों को दे देते हैं। व्यंग्यकार को उस बाबा के कारनामे पर शक हुआ। वे इस बात की सच्चाई को जानने के लिए खुद एक भक्त का रूप धारण करके बाबा के पास पहुँच गए। भक्त रूप में बैठा व्यंग्यकार को उस बाबा के सभी कारनामों और गतिविधियों को बड़ी ध्यान से देखने के बाद इस बात का पता चल गया कि वह बाबा कोई चमत्कार नहीं बल्कि हाथ की सफाई से अपने कारनामे को अंजाम दे रहा है। सही निर्णय तक पहुँचने के लिए व्यंग्यकार खुद भी उस बाबा के पास पहुँच गए और जब बाबा ने अपना हाथ घुमा कर उसे एक सेंट की शीशी थमाया तब व्यंग्यकार ने बाबा से उपर्युक्त प्रश्न पूछा। जिसके जवाब में बाबा के मुँह से सच्चाई निकल गई और उन्होंने बता दिया कि वह शीशी उन्हें गोल बाजार में पाँच रूपए के भाव से मिलती है। जब व्यंग्यकार ने उस साधु की सच्चाई को जान लिया तब उन्होंने इस खबर को अपने अखबार में प्रकाशित करवा दिया। व्यंग्यकार को इस बात का पता था कि जैसे ही वे इस खबर को छापेंगे वैसे ही वह बाबा गायब हो जाएगा। फिर भी व्यंग्यकार ने अपने विश्वास की सत्यता को जानने के लिए एक बार फिर से उस सज्जन के घर गए जहाँ पर वे बाबा ठहरे हुए थे। जब व्यंग्यकार ने उस घर के मालिक से पूछा कि बाबा कहाँ है तब वह सज्जन डरते हुए जवाब दिया कि बाबा अचानक अपने गाँव चले गए।“[6]

उपर्युक्त कथन उस घर के मालिक द्वारा कहा गया है जिसके घर पर बाबा ठहरे हुए थे। वह बाबा का बड़ा वाला भक्त था। किंतु व्यंग्यकार के पहुँचने से पहले ही उसने भी उस खबर को पढ़ लिया था जो कि बाबा के बारे में छापी गई थी। घर का मालिक काफी घबराया हुआ था क्योंकि मुझे उस बाबा की सच्चाई का पता चल गया था। इसलिए उसने भी अपनी तरफ से बाबा के लिए कोई सफाई नहीं दिया। किंतु हाँ उसे भी इस बात का पता चल गया था कि वह किसी ढोंगी बाबा का अनुसरण कर रहा था। हमारे समाज में ऐसे अनेक बाबा है जो कि नित्य उसे सचिन जैसे व्यक्तियों को मूर्ख बना रहे हैं और उसके माध्यम से और उससे जुड़े अनेक लोगों को अपनी जाल में फंसा कर अपना झूठा चमत्कार दिखाकर लोगों को ठगने का काम कर रहे हैं। हमें इस तरह के बाबाओं से सावधान रहने की आवश्यकता है। इस तरह के झांसा देने वाले किसी भी बाबा की जाल में आने से बचना है और दूसरों को भी रोकना है। अगर सभी इस बात से सावधान होंगे और दूसरों को भी सतर्क करेंगे तब शायद हमारे समाज से इस तरह के अंधविश्वास का निर्मूलन हो पाएगा। अगर अभी अपनी नींद से नहीं जागेअने ही ऐसे तो किया नहीं जागरूक को लोगों के आसपास अपने और हुए नहीं सतर्क खुद ,क बाबा हमारे समाज मूर्ख बनाते रहेंगे। समाज के लोगों को ठगने वाले बाबा या धर्मगुरु तरह के लोग समाज में कोई न कोई अफवाह फैला देते हैं और उसके साक्ष्य में अपने किसी भक्त को बिठा देते हैं और कुछ लोगों के सामने उसे विषय के संदर्भ में अपने भक्त से हामी भरवा देते हैं। जिसके आधार पर लोग भी उस अफवाह पर विश्वास करने लगते हैं। ऐसे ही एक घटना का पर्दाफाश करते हुए व्यंग्यकार गिरीश पंकज जी ने इस तरह से इस तरह से प्रकट किया है- “मैंने तो नहीं सुना लेकिन सुन रहा हूँ कि कुछ लोग ने रोने की आवाज सुनी थी। वैसे लोग भी ऐसे ही कह रहे हैं कि उन्होंने भी किसी दूसरे से सुना था कि उन्होंने देवता के रोने की आवाज सुनी थी।”[7]

उपर्युक्त कथन मंदिर में उपस्थित एक व्यक्ति द्वारा कहा गया है। एक बार जब इस तरह की अफवाह फैली कि मंदिर के देवता रो रहे थे। तब इस तथ्य की सच्चाई तक पहुँचने के लिए व्यंग्यकार ने छानबीन करना शुरू कर दिया। उन्होंने मंदिर के आसपास उपस्थित उन सभी लोगों से मंदिर के देवता के रोने के विषय में पूछना शुरू किया। वे जिन लोगों से पूछे सभी ने अलगमैं कि था रहा कह कोई तो थे रहे रो से जोर-जोर बहुत देवता कि था रहा कह कोई दिया। जवाब अलग-ने तो नहीं सुना लेकिन मुझे एक सज्जन बता रहे थे कि वे सच में रो रहे थे। जबकि सत्य यह था कि किसी ने भी देवता के रोने की आवाज को नहीं सुना था। फिर भी सभी ने इस बात पर विश्वास कर लिया था। क्योंकि हर व्यक्ति एक दूसरे से यही कह रहा था कि मुझे किसी ने कहा कि उसने देवता के रोने की आवाज सुनी। अफवाहें ऐसे ही फैलती हैं। सामने वाले की बात को सुनकर कोई व्यक्ति दूसरों से कहता है और दूसरे वाला तीसरे से लेकिन कोई उस बात की सच्चाई को जानने की कोशिश नहीं करता है। से तरह इस बात फैल जाती है। देवता की रोने वाली बात भी कुछ इसी तरह से फैल गई थी। कोई भी इतनी आसानी से किसी बात पर भरोसा नहीं करता है किंतु धर्म एक ऐसी चीज है जिसके नाम पर लोग आँखे बंद कर के भरोसा कर लेते हैं और भगवान के विषय में तो लोग बिल्कुल नहीं सोचते हैं। लेकिन हमें इस तरह की बातों से सतर्क होने की जरूरत है। क्योंकि हर वह बात शत प्रतिशत अफवाह होती है जिसके शुरू में यह कहा जाता है कि मैंने सुना था कि ऐसा हुआ था। समाज में फैलने वाली हर अफवाह की जड़ यहीं से होती है।

हम जब तक अपने आँखों से कोई बात ना देखें जब तक अपने कानों से ना सुने तब तक किसी बात को दूसरे व्यक्ति तक नहीं पहुँचना चाहिए किंतु होता इसके उल्टा है लोग किसी झूठी बात को भी सुनते ही अपने जान पहचान वाले व्यक्तियों से साझा कर देते हैं और वे अपनी जान पहचान के लोगों से साझा कर देते हैं। इस तरह से बात असत्य होते हुए सभी तक पहुँच जाती है। हमें किसी तीसरे व्यक्ति की बातों पर आँखें बंद करके यूं ही विश्वास नहीं कर लेना चाहिए। चाहे भले ही वह व्यक्ति हमारा कितना भी करीबी क्यों ना हो। समाज में अक्सर यही होता है। हम अपने करीबी लोगों की बातों पर विश्वास कर लेते हैं। उनके कहने पर किसी भी बात को मान लेते हैं। जिसकी वजह से कई बार हमें धोखा खाना पड़ जाता है। हमें इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इंसान अपने लोगों के द्वारा ही अधिक धोखा खाता है। जबकि उसकी भी गलती नहीं होती है। उसे भी कोई वैसा बताया रहता है। इस बात की सच्चाई का हमें तब पता चलता है। जब हम इसके तह में जाना शुरू करते हैं। तब हमारा वही करीबी कहता है कि मुझे तो मेरे जान पहचान के एक सज्जन ने बताया था और जब उससे पूछा जाता है तो वह किसी तीसरे व्यक्ति का नाम बताता है। ऐसा करने से अंत में यह पता चलता है कि जो बात उन तक पहुँचाई गई थी वह पूरी तरह से अफवाह थी। इसलिए हमें आँखे बंद करके किसी भी तरह के लोगों की बातों पर विश्वास नहीं करना चाहिए। जब तक की हम खुद ही उस बात की सच्चाई को न जानते हो। आधुनिक समय के धार्मिक लोगों के स्वभाव को उजागर करते हुए गिरीश पंकज जी ने लिखा है“-मित्र! समिति श्रद्धालुओं के नहीं अंध श्रद्धालुओं के पीछे पड़ती है। और उन श्रद्धालुओं की जो भगवान के आसपास का वातावरण तो शुद्ध रखने की दिशा में कोई मेहनत नहीं करना चाहते और

अगरबत्ती हिलाकर अपने कर्तव्य का द एंड करने में ही अपनी बहादुरी समझ लेते हैं रखने की दिशा में कोई मेहनत नहीं करना चाहते और अगरबत्ती हिलाकर अपने कर्तव्य का द एंड करने में ही अपनी बहादुरी समझ लेते हैं।" [8]

उपर्युक्त कथन व्यंग्यकार द्वारा कहा गया है। जब व्यंग्यकार ने एक भक्त से भगवान के जोर से रोने का कारण पूछा तब वह भक्त व्यंग्यकार को घूर कर देखने लगा। और उसे भ्रष्ट बुद्धि समिति का सदस्य कहा। किंतु व्यंग्यकार ने उस भक्त की बातों का जवाब देते हुए ताकि है पड़ता पीछे के श्रद्धालुओं अंध बल्कि है पड़ता नहीं पीछे के श्रद्धालुओं वह कि कहा का वह उन्हें भी वास्तविकता से अवगत करा सके ताकि बच्चे एक जागरूक और सतर्क नागरिक बन सके। इंसान को अपने आसपास के वातावरण को स्वच्छ करने के लिए काम करना चाहिए। भगवान के सामने अगरबत्ती या धूप जलाने मात्र से ही कर्तव्य पूरा नहीं होता है। भगवान की पूजा अर्चना करना गलत बात नहीं है किंतु भगवान के नाम पर किसी भी अफवाह को सही समझ लेना गलत है। धर्म के नाम पर किसी भी अनजान व्यक्ति के बहकावे में नहीं आना चाहिए। हमें किसी भी बात को मानने से पहले उसकी जड़ को जानने की कोशिश करनी चाहिए। जिससे कि हम उस बात की सच्चाई को जान सके। लोगों पर अंधविश्वास का इतना प्रभाव है कि अगर किसी की तबीयत खराब हो जाती है तब भी घर वाले उसका वैद्य से इलाज करवाने की जगह कर्मकांड करवाने पर अधिक महत्व देते हैं। इस बात को गिरीश पंकज जी ने उजागर करते हुए लिखा है "-मातालिए के कामना मंगल की स्वास्थ्य के पिता- यज्ञ करवाया जा रहा है।[9]

उपर्युक्त कथन रामकुमार की पत्नी चंद्रकला द्वारा कहा गया है। जब रामकुमार असामाजिक तत्वों के खिलाफ आवाज उठाने के लिए और उससे संबंधित आंदोलन में भाग लेने के लिए शारीरिक रूप से शामिल होने लगा। तब उनके घर वालों ने उसकी मानसिक स्थिति को संतुलित करने के लिए घर में हवन पूजन का कार्यक्रम करवाया। ताकि वह फिर से पहले की भाँति सामान्य हो सके। किंतु रामकुमार बहुत क्रोधी स्वभाव का व्यक्ति था। उसके स्वभाव से सभी लोग भली भाँती परिचित इसलिए जाएगा। भड़क वह तो गया बताया को वास्तविकता की पूजा हवन उसे अगर कि था पता उन्हें थे। उसकी अनुपस्थिति में हवन पूजन का कार्यक्रम बनाया गया। जब वह घर आया और हवन पूजा कार्यक्रम के बारे में पूछा तो उसकी पत्नी चंद्रकला ने माहौल को संभालने के लिए रामकुमार की मानसिक स्थिति की मंगल कामना के बदले माता पिता मंगल की स्वास्थ्य के जमी बताया। वजह की कामनानी स्तर पर समाज में आज भी अंधविश्वास अपनी जड़ जमाया हुआ है। ग्रामीण क्षेत्र में रहने वाले लगभग अधिकतर लोग अंधविश्वास और कर्मकांड जैसी चीजों में आज भी विश्वास रखते हैं। इस चक्कर में उन्हे कई बार बहुत परेशानियों का सामना भी करना पड़ जाता है। अंधविश्वास को बढ़ावा देने वाला व्यक्ति लोगों की भावनाओं के साथ खिलवाड़ करने लगता है। वह उनके आस्था के साथ खेलने लगता है। हमारी भावनाओं और आस्था को कमजोरी की तरह इस्तेमाल करने लगता है।

जादू – टोना : जादू ज्यादा बहुत इसमें लोग अधिकतर फिर है। नहीं आधार वैज्ञानिक कोई जिसका है विश्वास ऐसा एक टोना- में संबंध इसके है। रहा आ चला ही से समय पुरातन यह बल्कि है नहीं परंपरा नई या विश्वास नया कोई यह हैं। करते विश्वास शक् अलौकिक की प्रकार एक यह कि है मानना का लोगोंति है जिसको बड़ी मेहनत और तपस्या के बाद प्राप्त किया जाता है। इन शक्तियों का उपयोग करने वाला व्यक्ति अपनी इच्छा के अनुसार किसी को भी अपने वश में कर सकता है या किसी भी व्यक्ति के दिमाग को अपनी इच्छा से खराब कर सकता है। समस्त मानव समाज भी इसी बात में विश्वास करता है। यही वजह है कि किसी के घर में अगर किसी भी व्यक्ति की मानसिक स्थिति खराब हो जाती है तो लोग उसे मनोरोग चिकित्सक के पास ले जाने की जगह किसी बाबा के पास लेकर चले जाते हैं। उन्हे वह बाबा जो भी चीज करने की राय देते है उसके अनुसार लोग कर्मकांड करते हैं। लोगों को इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि बाबाओं द्वारा बताये गये कर्मकांड अधिकतर धकोसले होते हैं। इसलिए किसी भी व्यक्ति को कर्मकांड के चक्कर में नहीं पड़ना चाहिए। लोगों को इसी बात से अवगत कराते हुए गिरीश पंकज जी ने लिखा है "कहीं मेरे बेटे पर किसी ने कुछ कर कुरा तो नहीं दिया ? जादू - टोना ? कई बार तो बिल्कुल असामान्य हरकतें करने लगता है।"[10]

उपर्युक्त कथन रामकुमार की माँ द्वारा कहा गया है। रामकुमार बहुत ही भावुक किस्म का इंसान था। उस पर किसी भी काम को करने का जुनून सवार हो जाता था। समाज में हो रही बुराइयों के खिलाफ वह हमेशा आवाज उठाता रहता था। एक बार जब दिल्ली में गो वध बंद करने की माँग को लेकर कुछ संत लोगों ने धरना दिया तो उस धरने में रामकुमार भी शामिल होने वहाँ चला गया था। उसके तुरंत बाद वह रामदेव बाबा के आंदोलन में भी उपस्थित होने चला गया था। फिर एक बार जब वह विदेशी बैंकों में भारतियों के अरब डॉलर जमा हुए रुपए को वापस लाने की माँग को लेकर रामलीला मैदान में उपस्थित हुआ था। उस आंदोलन के दौरान पुलिस ने उन आंदोलनकारियों पर लाठी चार्ज कर दिया। इस दौरान रामकुमार

भी घायल हो गया। इसके बाद जब वह घर आया तब उसके सिर पर पट्टी बंधी हुई थी जिसे देखकर पूरा परिवार दुःखी हो गया। उसके इस कार्य से पिताजी बहुत नाराज हुए। उसकी पत्नी और माँ भी बहुत दुःखी थीं। सबने उससे एक ही सवाल पूछा कि उसे किसी भी तरह के आंदोलन में जाकर भाग लेने की जरूरत क्या है। वह घर बैठे-बैठे भी तो बुरी चीजों के खिलाफ हो रहे आंदोलन का समर्थन कर सकता है। रामकुमार ने किसी के सवाल का कुछ जवाब नहीं दिया और चुपचाप खामोश बैठा रहा। जब वह अपने दफ्तर चला गया तब उसकी अनुपस्थिति में घर के सभी सदस्यों द्वारा उसके इस व्यवहार पर विचार विमर्श किया गया। जिसके दौरान माँ ने अपने बेटे रामकुमार के संदर्भ में उपर्युक्त कथन कहा है।

माँ रामकुमार के इस व्यवहार से बहुत चिंतित थी। उसे लगा कि उसके बेटे को किसी ने कुछ कर दिया है जिसकी वजह से उसका मानसिक संतुलन खराब हो गया है। यह समाज की स्वाभाविक प्रक्रिया है। जब कोई व्यक्ति अपने स्वाभाविक व्यवहार से कुछ अलग करने लगता है, तब उसके घर परिवार के लोगों के दिल और दिमाग में एक ही बात बैठ जाती है कि उस व्यक्ति को किसी ने कोई जादू-टोना कर दिया है। इस तरह का नकारात्मक विचार आते हैं इंसान इसे उगाने के लिए तरह-तरह का उपाय सोचने लगता है और खास तौर पर जब किसी के व्यवहार में अचानक परिवर्तन देखा जाता है तब लोग उसे व्यक्ति को किसी मानसिक चिकित्सा में दिखने की जगह कर्मकांड के द्वारा टठीक करने की कोशश करता है। इस सिलसिले में घर वाले किसी ढोंगी बाबा के पास उसका समाधान निकालने के लिए पहुँच जाते हैं। भारतीय संस्कृति में किसी परिवार में बड़ों की बातों को अधिक महत्व दिया जाता हैं। बड़े लोग जादू-टोना जैसे अंधविश्वास वाली चीज़ों को मानते हैं। तभी तो रामकुमार की पत्नी ने जब रामकुमार को मनोचिकित्सक को दिखाने का प्रस्ताव रखा तब पिताजी ने उसकी बातों को काटते हुए कहा कि “हाँ, दिखा देना चाहिए। लेकिन पहले घर में हवन पूजा करवा भी लेना ठीक रहेगा। रामू पर अगर कोई बुरी छाया पड़ी होगी तो भाग जाएगी।”[11]

रामकुमार के पिताजी का विचार समस्त मानव समाज को दर्शाता है हमारे समाज में पुराने समय से जादूटोना-वशीकरण काला जादू जैसी चीज़ों पर विश्वास किया जाता है। अगर किसी का स्वस्थ भी खराब होता है और कुछ समय तक ठीक नहीं होता है तब भी लोग पहले इसी बात का संदेह करते हैं उस व्यक्ति को किसी ने कोई जादू टोना कर दिया है। जिससे घबरा कर घर वाले ढोंगी साधु महंत के शरण में जाते हैं। वे लोग घर वालों की समस्या और उनकी मानसिकता को समझकर उन्हें कुछ समस्या से बाहर निकलने के लिए कर्मकांड करवाते हैं। जिसके फल स्वरुप घर वाले स्वस्थ होने की आश में उन ढोंगी साधुओं द्वारा बताई गई हर एक बात का अनुसरण करते हैं। दुख की बात यह है कि आज भी हमारा समाज इतना शिक्षित होने के बाद भी कर्मकांड और अंधविश्वास जैसी चीजों से उबर नहीं पाया है।

[1] गिरीश पंकज, सम्मान फिक्सिंग पृष्ठ-116
[2] गिरीश पंकज, सम्मान फिक्सिंग पृष्ठ-117
[3] गिरीश पंकज, ट्रांसजेंडर पृष्ठ-120
[4] गिरीश पंकज, मौसम है सेल्फियाना पृष्ठ-122
[5] गिरीश पंकज, दिल्ली और माफिया पृष्ठ-122
[6] गिरीश पंकज, दिल्ली और माफिया पृष्ठ-122
[7] गिरीश पंकज, सम्मान फिक्सिंग पृष्ठ-79
[8] गिरीश पंकज, सम्मान फिक्सिंग पृष्ठ-80
[9] गिरीश पंकज,ए लव स्टोरी वाया फेसबुक पृष्ठ-32
[10] गिरीश पंकज, ए लव स्टोरी वाया फेसबुक पृष्ठ-32
[11] गिरीश पंकज, ए लव स्टोरी वाया फेसबुक पृष्ठ-32